

वह² सर्व. (तद्.) वार्तालाप के प्रसंग में किसी अन्य व्यक्ति या पदार्थ के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द।

वहन पुं. (तत्.) 1. भार ले जाना या ढोना 2. लादना 3. स्रोत, बहाव 4. कर्तव्य का निर्वाह।

वहना स.क्रि. (तद्.) बोझ लादना या ढोना, दायित्व का निर्वाह करना।

वहशियाना वि. (अर.+फार.) वन्य पशुओं के समान, निर्दयतापूर्ण।

वहनीय वि. (तत्.) ढोने योग्य, वहन करने लायक, धारण करने योग्य।

वहम पुं. (अर.) संदेह, भ्रम, भ्रमपूर्ण विचार।

वहमी वि. (अर.) संदेह करने वाला, संदेही प्रकृति वाला व्यक्ति, भ्रमपूर्ण।

वहशत स्त्री. (अर.) वन्य पशु जैसा स्वभाव, पागल जैसा उजड़ व्यवहार, पागलपन मुहा. वहशत सवार होना- आवेश में पशुता का व्यवहार करना।

वहशत अंगेज वि. (अर.+फा.) (फारसी) डर उत्पन्न करने वाला, भयभीत करने वाला, भयोत्पादक।

वहशत नरक वि. (तत्.) खतरनाक, भयपूर्ण।

वहशी वि. (अर.) जंगल में रहने वाला, (पशु) वन्य वातावरण में रहने वाला, हिंसक।

वहाँ क्रि.वि. (तद्.) उस (संबंधित) स्थान पर, निर्धारित स्थल पर।

वहाबी पुं. (अर.) 'बहावी' नामक एक मुस्लिम संप्रदाय या उस संप्रदाय को मानने वाला। (वहाबी संप्रदाय या मत का प्रवर्तक अब्दुल वहाब नामक मौलवी था, इस संप्रदाय में कुरान को मान्यता दी जाती है 'हदीस' को नहीं।)

वहित वि. (तत्.) जिसका वहन किया गया हो, लाया गया, खींचा गया, निर्वाह किया गया।

वहित्र पुं. (तत्.) ढोने का साधन, जलपोत, जहाज, नाव, नौका।

वहिनी स्त्री. (तत्.) 'वहित्र' शब्द के स्त्रीलिंग में प्रयोग होने वाली नाप।

वहीं क्रि.वि. (तद्.) वहाँ ही-वहीं, केवल निर्धारित स्थान पर, उसी स्थान पर।

वही वि. (तद्.) वाहक, वहन करने वाला पुं. हल को वहन करने वाले 'बैल' के अर्थ में प्रयुक्त, वह ही (वही) पूर्वकथित व्यक्ति (अन्य व्यक्ति नहीं, के अर्थ में प्रयुक्त)।

वहै सर्व. (तद्.) 'वह ही' अर्थ में प्रयुक्त वि. वैसा, वही।

वहनि/वहनि पुं. (तत्.) आग, अग्नि, अनल, भूख (तीन प्रकार की अग्नियाँ हैं, जिन्हें क्रमशः जठरानल, बड़वानल, दावानल कहा जाता है) 'जठरानल' पेट की अग्नि होती है जो भूख बढ़ाती है, 'बड़वानल' समुद्र में स्थित अग्नि होती है और उसके कारण समुद्र में ज्वारभाटा आता है, दावानल जंगल की अग्नि होती है जो जंगल (वन) को जलाती है वि. जलाने वाला, क्षुधावर्धक, चमकीला।

वहनिगर्भ पुं. (तत्.) 1. शमी का वृक्ष, जिसमें अग्नि होती है, (शमीवृक्ष की लकड़ी से 'अरणि' बनाई जाती है और अरणिमंथन करके 'अरणि' को रगड़कर 'यज्ञ' के अनुष्ठान में अग्नि उत्पन्न की जाती हैं 2. बाँस।

वहनिधौत वि. (तत्.) 1. आग की तरह पवित्र 2. जो आग में तपाकर या तपकर शुद्ध किया गया हो।

वहनिमय वि. (तत्.) अग्नि से युक्त।

वहनिमित्र पुं. (तत्.) हवा, पवन।

वहनिमुख पुं. (तत्.) देवता, सुर।

वहनिवधु/वहनिवल्लभा स्त्री. (तत्.) अग्नि की पत्नी (स्त्री) स्वाहा, (हवन यज्ञ आदि में आहुति देने के क्रम में 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण अग्नि के प्रीत्यर्थ किया जाता है।

वहनिशिखा स्त्री. (तत्.) आग की लपट, ज्वाला, अग्निज्वाला।

वहनिस्फुलिंग पुं. (तत्.) चिंगारी, आग की चिंगारी।

वह्य पुं. (तत्.) रथ, वाहन, गाड़ी, शकट।

वाँ क्रि.वि. (तत्.) 1. वहाँ, उस जगह पर 2. प्रत्यय के रूप में प्रयुक्त जैसे- पाँचवाँ, सातवाँ, आठवाँ, नवाँ, दशवाँ, ग्यारहवाँ, बारहवाँ आदि।